हिंदी

(वसंत) (अध्याय- 14) (वन के मार्ग में)
(कक्षा - 6)
प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1:

नगर से बाहर निकलकर दो पग चलने के बाद सीता की क्या दशा हुई?

उत्तर 1:

नगर के बाहर सीता जी ने दो कदम ही रखे थे कि उनके माथे पर पसीना आ गया। थकान महसूस होने लगी और रामचंद्र जी से पूछने लगी कि अभी और कितना चलना है। पर्णकुटी कहाँ पर बनाएंगे।

प्रश्न 2:

'अब और कितनी दूर चलना है, पर्णकुटी कहाँ बनाइएगा', किसने किससे पूछा और क्यों?

उत्तर 2:

सीता जी ने राचंद्रजी से पूछा क्योंकि वे बहुत थक चुकी थी और विश्राम करना चाहती थी।

प्रश्न 3:

राम ने थकी हुई सीता की क्या सहायता की?

उत्तर 3:

राम ने थकी हुई सीता को देखकर लक्ष्मण को जल लेने के लिए भेज दिया और स्वयं पेड़ के नीचे बैठकर अपने पैरों की धूल को साफ करने लगे तथा पैरों के कांटे धीरे-धीरे निकालने लगे जिससे सीता कुछ देर और विश्राम कर सकें।

प्रश्न 4:

दोनों सवैयों के प्रसंगों में अंतर स्पष्ट करो।

उत्तर 4:

पहले सवैये में सीता की व्याकुलता का वर्णन है तो दूसरे सवैये में राम के द्वारा सीता की व्याकुलता को देखकर पेड़ के नीचे बैठकर देर तक विश्राम करने का वर्णन है।

प्रश्न 5:

पाठ के आधार पर वन के मार्ग का वर्णन अपने शब्दों में करो।।

उत्तर 5:

वन का मार्ग काँटों से भरा था। बहुत गर्मी थी। धूल मिट्टी के कारण थोड़ा सा चलने पर ही थकान होने लगती थी।

अनुमान और कल्पना

गरमी के दिनों में कच्ची सड़क की तपती धूल में नंगे पाँव चलने पर पाँव जलते हैं। ऐसी स्थिति में पेड़ की छाया में खड़ा होने और पाँव धो लेने पर बड़ी राहत मिलती है। ठीक वैसे ही जैसे प्यास लगने पर पानी मिल जाए और भूख लगने पर भोजन। तुम्हें भी किसी वस्तु की आवश्यकता हुई होगी और कुछ समय बाद पूरी हो गई होगी। तुम सोचकर लिखो कि आवश्यकता पूरी होने के पहले तक तुम्हारे मन की दशा कैसी थी?

उत्तर-
किसी वस्तु की आवश्यकता पूरी होने से पहले मन उसके लिए बेचैन तथा व्याकुल रहता है। हम बार-बार उस वस्तु के विषय में सोचते रहते हैं तथा उसे पाने के अनेक प्रयास करते हैं। किसी दूसरे काम में मन नहीं लगता।

भाषा की बात

प्रश्न 1.
लखि-देखकर।
धरि-रखकर।
पोंछि-पोछकर।
जानि-जानकर।
ऊपर लिखे शब्दों और उनके अर्थ को ध्यान से देखो। हिंदी में जिस उद्देश्य के लिए हम क्रिया में 'कर' जोड़ते हैं,
उसी के लिए अवधी में क्रिया में f (इ) को जोड़ा जाता है, जैसे-अवधी में बैठ + 1 = बैठि हिंदी में बैठ + कर = बैठकर। तुम्हारी भाषा या बोली में क्या होता है? अपनी भाषा के ऐसे छह शब्द लिखो। उन्हें ध्यान से देखो और कक्षा में बताओ।

उत्तर-
मेरी भाषा हिंदी खड़ी बोली है पर भोजपुरी में निम्नलिखित उद्देश्य के लिए अलग क्रिया के साथ 'के' का प्रयोग करते हैं जैसे

1. देखकर – ताक के
2. बैठकर – बइठ के।
3. रुककर – ठहर के।
4. सोकर – सुत के
5. खाकर – खा के।
6. पढ़कर – पढ़ के।

प्रश्न 2.
"मिट्टी का गहरा अंधकार, डूबा है उसमें एक बीज।'
उसमें एक बीज डूबा है। जब हम किसी बात को कविता में कहते हैं तो वाक्य के शब्दों के क्रम में बदलाव आता है; जैसे-"छाँह घरीक वै ठाढ़े" को गद्य में ऐसे लिखा जा सकता है। "छाया में एक घड़ी खड़ा होकर।" उदाहरण के आधार पर नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को गद्य के शब्दक्रम में लिखो।

उत्तर-
पुर तें निकसी रघुबीर-बधू,
सीता जी नगर से बाहर वन जाने के लिए निकलीं।

- पुट सूख गए मधुराधर वै॥

मधुर होठ सूख गए।

- बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।

कुछ समय तक श्रीराम ने आराम किए और अपने पैरों से देर तक काँटे निकालते रहे।

- पर्नकुटी करिहौं कित है?
- पत्तों की कुटिया अर्थात पर्णकुटी कहाँ बनाएँगे ?